किसान दिवस
पर विशेष

फसल पर योग का प्रभाव

ब्रह्माकुमार राजू भाई से शाश्वत यौगिक खेती विषय पर दयाशंकर सोनकर की वार्ता

प्रश्न:- चारों ओर सेहत के लिए हाहाकार मचा हुआ है, मानव दुखी और अशान्त होकर घुट-घुटकर जीने को मजबूर है, क्या कारण है कि हज़ारों हॉस्पिटल और डॉक्टर होने के बावजूद बीमारियाँ दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं?

उत्तर:- इसकी गहराई में जायें तो हम पायेंगे कि वर्तमान समय में हम जो अन्न खा रहे हैं, वो हमें उतना पोषण नहीं दे पा रहा जितना आवश्यक है। साथ ही धरती माँ की शक्ति भी क्षीण होती जा रही है। भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ाने के लिए रासायनिक खादों व कीटनाशकों का प्रयोग हो रहा है जिससे उपज तो बढ़ी है लेकिन हानिकारक रसायनों के कारण पौष्टिकता में कमी आई है। यही वजह है कि स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव हो रहा है। धीरे-धीरे भूमि इतनी बंजर और निरुपजाऊ होती जा रही है कि आगे वहाँ घास भी नहीं उगेगी। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार फसलों को बढ़ाने के लिए जो संसाधन चाहिएँ वे उनकी जड़ों के पास पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं, ऊपर से कुछ भी देने की ज़रूरत नहीं होती क्योंकि भूमि स्वयं ही अन्नपूर्णा है। हमारी फसल भूमि से केवल 1.5 से 2 प्रतिशत ही लेती है बाकी तो वह हवा, पानी से लेती है इसलिए अतिरिक्त खाद डालने की ज़रूरत नहीं है। अकाल में जंगलों में कई वृक्ष हरे-भरे होते हैं तथा फलों से लदे होते हैं। जंगल में कहाँ भूमि की जुताई की जाती है, गोबर या रासायनिक खाद डाले जाते हैं, कौन-से कीटनाशक का छिड़काव होता है। बिना पानी, खाद, दवा के हर साल अनगिनत फल लगते हैं। वास्तव में भूमि में प्रचंड मात्रा में खनिज तत्व मौजूद हैं लेकिन ये उस स्थिति में नहीं होते कि जड़ें अवशोषित कर पाएं। इन्हें अवशोषित होने लायक बनाने का काम भूमि में रहने वाले असंख्य बैक्टिरिया करते हैं। जंगल की ज़मीन में ये प्रति एक ग्राम मिट्टी में लाखों से करोड़ों की संख्या में होते हैं, जो उर्वरता बनाए रखते हैं। लेकिन हमारे खेतों में रासायनिक खाद डालने के कारण भूमि के लाभदायक बैक्टिरिया समाप्त हो गये हैं। हमने उन्हें रासायनिक खाद, घासनाशक दवाओं आदि से नष्ट कर दिया है, इसका असर उत्पन्न होने वाले अनाज पर पड़ता है, जो रोगों का कारण बनता है। यदि हमें भूमि की उर्वरता पुन: बढ़ानी है तो अनंत कोटि लाभदायक बैक्टिरिया को पुन: स्थापित करना होगा।

प्रश्न:- इन लाभदायक बैक्टिरिया को स्थापित करने, जीवन को निरोग रखने तथा पैदावार बढ़ाने के लिए आप किस तरह की पद्धति अपनाने का सुझाव देते हैं?

उत्तर:- अनाज उत्पादन की कई पद्धतियां हैं जिनमें नैसर्गिक खेती, सेन्द्रिय खेती, रासायनिक खेती, जैव ऊर्जा खेती पद्धति आदि हैं। समय की पुकार है कि हम रासायनिक खेती की जगह जैविक खेती अपनाएं। जैविक खेती पूर्णत: प्रकृति से जुड़ी हुई है तथा रासायनिक खेती से अधिक किफ़ायती और लाभकारी सिद्ध हुई है। जैविक खेती का मुख्य आधार प्राकृतिक पदार्थ जैसे गाय का गोबर, गोमूत्र, विभिन्न वनस्पतियों के पत्ते आदि हैं। जैविक खेती में रासायनिक खाद और कीटनाशकों की जगह जैविक कीटनाशक तथा नैसर्गिक विधियां हैं, जो फसल के लिए अच्छी, लाभकारी तथा पूर्णत: प्राकृतिक हैं। आज

तक हमने जीवाणुओं को रसायनों से मार कर खेती की है, अब हमें जीवाणुओं को बढ़ाकर खेती करनी है। इसलिए हम अनुभव के आधार पर कुछ सफल प्रयोग आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं जिनके चमत्कारिक प्रभाव देखने को मिले हैं। ऐसा ही एक प्रयोग है जिसे जीवामृत प्रयोग कहते हैं।

जीवामृत एक ऐसा प्रभावी मिश्रण है जिसमें करोड़ों लाभकारी जीवाणु होते हैं। जीवामृत अद्भुत प्रकार का जामन है, जैसे 100 लीटर दूध में एक चम्मच दही डाल दिया जाए तो कुछ घण्टों में सारा दूध दही में बदल जाता है वैसे ही जीवामृत के जीवाणु सारी भूमि में फैलते जाते हैं। जीवामृत भूमि में जो केंचुएं तथा अन्य जीव-जंतु होते हैं उन्हें आकर्षित कर ऊपर ले आता है, जोकि खेती के लिए लाभकारी हैं। ज़मीन को शक्तिशाली बनाने के लिए जीवाणुयुक्त जैविक खाद का इस्तेमाल करना बहुत ज़रूरी है इससे फसलों की उत्पादन क्षमता बढ़ती है एवं ज़मीन में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ने से फसल की रोग प्रतिकारक शक्ति में इज़ाफा होता है।

फसलों के संरक्षण के लिए पांच किलो नीम की हरी पत्तियाँ, पाँच लीटर गोमूत्र, 100 लीटर पानी, एक किलो देशी गाय के घी के साथ मिलाकर 24 घण्टे के लिए रख दें, दूसरे दिन रस छानकर छिड़काव करें। यह उपाय रस चूसने वाले कीटों तथा छोटी इल्लियों पर कारगर रहा है।

प्रश्नः- तन के साथ मन भी स्वस्थ हो इसके लिए ग्राम विकास प्रभाग द्वारा संचालित नये युग का नया कदम क्या है?

उत्तरः- प्राचीन काल से ही कहा जाता है कि अन्न का मन पर प्रभाव पड़ता है और मन का स्वास्थ्य और रोगों से गहरा सम्बन्ध है। कहते हैं, जैसा अन्न वैसा मन और जैसा मन वैसा तन। एक समय ऐसा था, मानव निरोगी तथा दैवी गुणों से सम्पन्न था, उस समय के भारत को सोने की चिड़िया, स्वर्ग भूमि नाम से आज भी याद करते हैं। परन्तु कालचक्र का पहिया घूमेगा ही। स्वर्णिम सतयुगी दुनिया के बाद त्रेता-युग, द्वापरयुग, कलियुग आए। वर्तमान समय सृष्टि का तमोप्रधान स्वरूप विकट परिस्थितियां लेकर खड़ा है। धरती पर उपलब्ध सभी पदार्थ दूषित, दुखदाई, विषैले हो गये हैं और इसका मुख्य कारण है मानव मन का विषैला होना। प्रकृति मानव की अनुगामिनी है। प्रजापिता ब्रह्मा-कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय तथा उसकी सहयोगी संस्था राजयोग एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा भारत के किसान भाई-बहनों को ''शाश्वत यौगिक खेती'' के विषय में जागृत किया जा रहा है। उसके परिणामस्वरूप कम खर्च में अच्छी फसल प्राप्त हो रही है। यह नये युग के लिये नया कदम है।

प्रश्नः- शाश्वत यौगिक खेती क्या है? इसके तरीके एवं लाभ बताएं?

उत्तरः- यह एक अनोखा विज्ञान है। राजयोग के अभ्यास से पाँचों तत्वों (पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल तथा आकाश), ग्रहों, तारों, जीव-जंतुओं को परमात्मा की शक्ति का प्रकंपन देकर यौगिक खेती पद्धति में इनका सहयोग लेते हैं जिससे वनस्पतियाँ बढ़ती हैं तथा उत्पादन मिलता है। मन ही मन उनसे बातें करते हैं कि अब तक हमने आपको जो दुःख दिया इसके लिये माफी मांगते हैं और आज के बाद आपके नियम में कोई बाधा नहीं डालेंगे। इस भावना से चैतन्य ऊर्जा के प्रकंपन से प्रकृति सतोप्रधान, सुखदाई बनती है।

डॉ.रुडाल्फ स्टाइनर ने कहा है कि इस सृष्टि में जो भी जीव-जंतु, ग्रह, तारे हैं, सब ब्रह्माण्ड की शक्ति से जुड़े हैं। उन्होंने इस बात को स्पष्ट किया है कि ज़मीन की उर्वरा शक्ति को ब्रह्माण्ड की शक्ति द्वारा प्रेरित करके उत्पादन और गुणवत्ता बढ़ा सकते हैं। इसके लिए सुबह पहले प्रकृति को 20 मिनट, फिर ज़मीन को 10 मिनट प्रकंपन देते हैं, इससे ज़मीन में जो जीवाणु होते हैं उनकी कार्यक्षमता बढ़ती है लेकिन इन जीवाणुओं की संख्या बढ़ाने के लिये जैविक खाद का इस्तेमाल भी करते हैं।

जीव वैज्ञानिक सर जगदीशचन्द्र बसु ने भी इस बात को

स्पष्ट किया है कि कैसे वनस्पति विचारों को समझती है तथा प्रतिक्रिया देती है। उन्होंने ऑप्टिकल पल्स रिकॉर्डर मशीन द्वारा सिद्ध किया कि जब बाहर से किसी प्रकार की ऊर्जा पौधों को स्पर्श करती है तो उसका विद्युत ऊर्जा में परिवर्तन होता है। वह ऊर्जा सकारात्मक होती है तो पौधों की कार्यक्षमता गतिमान होती है, अगर वही ऊर्जा नकारात्मक होती है तो पौधे घबराते हैं। उनकी प्रतिकार क्षमता कम होती है, उत्पादन भी कम होता है। सर जगदीशचन्द्र बसु के प्रयोग को आगे बढ़ाते हुए क्लीव बॅक्स्टर नाम के संशोधक ने कैलिफोर्निया में बहुत ही स्पष्ट रूप से विस्तारित किया कि अपनी सोच का असर पौधों पर किस प्रकार होता है। आज खेती करते समय किसान व्यसन करता है, जब किसी समस्या से घबरा जाता है या देह अभिमान के कारण उसके मन में जो भी विचार चलते हैं उनका बुरा परिणाम फसल पर होता है। ज़मीन तैयार करते समय यदि ट्रैक्टर में अश्लील गीत बजाते हैं तो उनका भी गलत असर होता है। उस समय हमें भगवान को याद करने वाले गीत बजाने चाहिएं। चेन्नई की अन्नामलाई यूनिवर्सिटी के डॉ.टी.सी.सिंह ने फसल में बांसुरी, वीणा, तबला आदि बजाकर उत्पादन में 20 प्रतिशत की वृद्धि की।

प्रश्न:- आपका ग्राम विकास प्रभाग गांवों के विकास के लिए क्या योगदान दे रहा है?

उत्तर:- हमारा विज़न है देश को स्वर्णिम गांव बनाना। यह अनुभव किया गया है कि नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की कमी के कारण गांवों में अन्धविश्वास, जातीय भेदभाव, दुर्व्यसन, लड़ाई-झगड़े और मुकदमेबाज़ी बढ़ रहे हैं। शिक्षा के अभाव में बीमारियों से ग्रसित हैं इसके लिए ग्राम विकास प्रभाग ने चार सूत्रीय कार्यक्रम 1- स्वच्छता 2- साक्षरता 3- सुस्वास्थ्य 4- आत्म-निर्भरता शुरू किया है। इसमें संस्था के सदस्य गांवों में कैंप लगाकर लोगों को जागरूक करते हैं। इसके अलावा भारत के गाँवों को विकसित करने के लिए हरित क्रांति, श्वेत क्रांति और आध्यात्मिक क्रांति अभियान शुरू किया गया है। हमारा मानना है कि आध्यात्मिक शक्ति को जीवन में लाने से सर्व समस्यायें हल होंगी तथा यह भारत, स्वर्णिम भारत के रूप में उभरेगा।

प्रश्न:- शाश्वत खेती कहाँ और कौन कर रहे हैं तथा उन्हें क्या लाभ हुए हैं?

उत्तर:- गुजरात में दांतीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय तथा उत्तराखण्ड में पंत नगर कृषि विश्वविद्यालय में शाश्वत यौगिक खेती पर विशेष शोध कार्य चल रहा है। पंत नगर कृषि विश्वविद्यालय की प्रो.डॉ.सुनीता पांडे ने बताया कि हमारे विचारों का प्रभाव जल तत्व पर बहुत शीघ्र पड़ता है। हम पानी को योग से वायब्रेशन देकर शक्तिशाली बनाएं और उसका प्रयोग करें तो फसल अच्छी हो सकती है। इस पद्धति का प्रयोग महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, पंजाब एवं उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों में किया जा रहा है। महाराष्ट्र के सांगली जिले में कवठेपिरान गांव में शंकर दत्त माली नाम का किसान है। उनकी खेती तथा उसके चारों ओर की 200 एकड़ ज़मीन बंजर थी जिस पर कोई फसल नहीं आती थी। ऐसी खारयुक्त ज़मीन में उस किसान ने यौगिक खेती का सफलतम् प्रयोग किया। आज उसे 40 से 50 टन प्रति एकड़ गन्ना उत्पादन मिल रहा है। इसके साथ ही ज़मीन बहुत शक्तिशाली हो गई है। उसने खेती के चारों ओर नीम के पेड़ लगाये हैं जिन पर पक्षी आकर बैठते हैं। सारे जीव-जंतु कुदरत की ऐसी देन हैं जो बिना पैसे के दिन-रात काम कर रहे हैं और फसल बढ़ा रहे हैं, यह प्रत्यक्ष मॉडल देख-कर वहाँ के ही अन्य 10 किसान भी अपनी खेती यौगिक पद्धति से करने लगे हैं। चार साल में जमीन का सेन्द्रिकरण 04 से 1.22 हो गया है। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125